''मीठे बच्चे – सबको यही पैगाम दो कि देह सहित देह के सब धर्मों को भूल अपने को आत्मा समझो तो सब दु:ख दूर हो जायेंगे''

प्रश्न:- तुम बच्चों को किस बात में फालो फादर करना है?

उत्तर:- जैसे इस ब्रह्मा ने अपना सब कुछ ईश्वर अर्पण कर दिया। पूरा ट्रस्टी बना, ऐसे ट्रस्टी बनकर रहो। कभी भी उल्टा-सुल्टा खर्चा कर पाप आत्माओं को नहीं देना। अपना सब कुछ ईश्वरीय सेवा में लगाओ, पूरा ट्रस्टी बनो। बाप की श्रीमत पर चलते रहो। बाप देखते हैं कौन बच्चा कितना श्रीमत पर चलता है।

गीत:- तू प्यार का सागर है....

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। कहते हैं बाबा हम कहाँ से आये, कब आये फिर वापिस जाने की राह कैसे भूले। यह ड्रामा कानों में समझा दीजिए। हम कौन हैं, कहाँ से आये फिर कहाँ चले गये! एक ज्ञान की बूँद तो दे दो क्योंकि ज्ञान सागर है ना। अभी बच्चे जानते हैं हम आत्मायें कहाँ की रहने वाली हैं फिर बाप को और अपने स्वर्ग को कैसे भूले और कैसे आकर यहाँ दु:खी हुए – यह राज़ कानों में सुनाओ। अब बाप ज्ञान का सागर भी है, पवित्रता का सागर भी है। प्रेम का सागर भी है। शान्ति का, सुख और सम्पत्ति का सागर भी है। अभी बेहद के बाप द्वारा यह सब बातें समझते हैं। आदि में कहाँ से आये फिर मध्य में क्या हुआ, जो हम रास्ता भूल दु:खी हुए। फिर अब बाप को कहते हैं बाबा हमको रास्ता बताओ। हम अपने सुखधाम शान्तिधाम में जायें। बाप ही बैठ बतलाते हैं – तुम आदि में कौन थे फिर मध्य में क्या हुआ। भक्ति मार्ग कैसे शुरू हुआ, अन्त में क्या हुआ, यह आदि-मध्य-अन्त का राज़ अब बुद्धि में बैठा है। यह ड्रामा है ना। यह मनुष्यों को जरूर जानना है – क्योंकि एक्टर्स हैं। जानते हैं हम आत्मायें निराकारी शान्तिधाम से आती हैं, यहाँ टॉकी धाम में। मूलवतन, सूक्ष्मवतन फिर यह है स्थूलवतन। फिर मूलवतन से आत्मायें आती हैं टॉकीधाम में, शरीर धारण कर पार्ट बजाने। आत्मा का निवास स्थान शान्तिधाम है। यह बातें दुनिया में कोई भी नहीं जानते हैं। यह ज्ञान सागर बाप ने ही आकर समझाया है। अभी समझा रहे हैं – ज्ञान सागर कहा जाता है पारलौकिक परमपिता परमात्मा को। मनुष्य को नहीं कह सकते। यह महिमा सिर्फ एक बाप की गाई जाती है, जिसको और कोई नहीं जानते। अभी विनाश का समय है। गाया हुआ है विनाश काले विप्रीत बुद्धि युरोपवासी... अभी बाप ने तुम्हारा बुद्धियोग अपने साथ लगाया है कि मामेकम् याद करो। मैं मुसलमान हूँ, हिन्दू हूँ, बौद्धी हूँ... यह सब देह के धर्म हैं। आत्मा तो आत्मा ही है। बाप समझाते हैं – देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करेंगे तो पतित से पावन बन जायेंगे। बाप कहते हैं– इस देह को भी भूलो। यह सबके लिए बाप का पैगाम है। देह सहित देह के जो सम्बन्ध हैं, सबको भूलो। मैं आत्मा हूँ, हम सब ब्रदर्स का बाप एक है। यह ब्रह्मा भी कहेंगे हम आत्मा हैं तो सब भाई-भाई हो गये। इस समय सब भाई-भाई पतित दु:खी हैं। सब काम चिता पर चढ़ भस्म हो पड़े हैं। जब द्वापर के आदि में रावण राज्य शुरू होता है तो फिर तुम वाम मार्ग में जाते हो। तब ही फिर और धर्म शुरू होते हैं। आधा समय तुम पवित्र रहते हो। फिर आधा में तुम पतित बनते हो। 21 जन्म भारत में ही गाये जाते हैं। कुमारी वह जो 21 कुल का उद्धार करे। कुमारी का मान है। तुम भारत का तो क्या सारी दुनिया का उद्धार कर रहे हो। तुम जानते हो हम सब आत्मायें शिवबाबा के बच्चे हैं। तो कुमार ही ठहरे। भाई-बहन तब होते हैं जब प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद बनते हैं। यह तुम बच्चों को ज्ञान है। हम आत्मायें सब भाई-भाई हैं, सब बाप को पुकारते हैं – हे पतित-पावन आओ। यहाँ रावणराज्य से, दु:ख से हमको लिबरेट करो। फिर हमारा गाइड बन हमको वापस ले चलो। हमारे दु:ख हरो और सुख दो। अभी तुम समझते हो बरोबर बाबा आया हुआ है। हमको इस कलियुगी रावणराज्य से छुड़ाए साथ ले चलेंगे। बाप जानते हैं सभी आत्मायें पतित हैं, इसलिए शरीर भी पतित है। आत्मा को ही पावन बनाकर ले जाते हैं निर्वाणधाम में। पास्ट से प्रेजेन्ट फिर फ्युचर होगा। आदि-मध्य-अन्त फिर आदि। सतयुग आदि कलियुग अन्त फिर फ्युचर होगा सतयुग। यह तो सहज है ना। अच्छा बीच में क्या हुआ? हम कैसे गिरे? हम पावन देवता थे फिर पावन से पतित कैसे बने! अभी तुम समझते हो, बाप समझाते हैं – जब रावणराज्य शुरू होता है तब तुम पतित बनते हो। अब फिर तुमको भविष्य देवता बनाने आया हूँ। इसमें डिफीकल्टी की कोई बात नहीं। बाप कहते हैं–तुमको इस विषय सागर से पार ले जाते हैं। गाते भी हैं नईया मेरी... सभी पुकारते हैं एक बाप को। हमारी नईया जो डूबी हुई है, उनको क्षीरसागर में ले चलो। उनको खिवैया, बागवान भी कहते हैं। अभी कांटों के जंगल में पड़े हैं। हमको फिर फूलों के बगीचे में ले चलो। देवतायें फूल हैं ना। अभी सब हैं कांटे। एक दो को दु:ख ही देते रहते हैं। देवता कभी किसको दु:ख नहीं

oles= Jen eBeesmegKen emegKen w Jen leesfmeÀie esn Qeg³ en eÀÀkeÌ keÀue mgej n sn es= keÀn lesn Qeö yeeyeen ceKeÀn eBmesYeues Fme mesfi ®=eÀkeÀesn ceKeÀmesYeues mle³ eig= $ise ceÀW en ven eRpeve eke³ eeÀW JeneBeesn cemegKeer Lesfe À ogKeerkeÀyen S? peyej eJeCej ep³e Meg n Dee~ Yeej leJeemerj eJeCekeÀspeues en erj n lesn Qpeyelke À GvekeÀe deveMe ven eRn Dee n w fe À mle³ eig ceÀWespeen erj Jee&

peue³ eÀWs ³en n Yeefkeì eesie& DeYeerj eJeCekeÀej ep³e Keueme neeen w Yeefkeì eesie&ceÀWeJeCekeÀesn j Jee&peues en Qej vlegej leene ven eRn w DeYeerj eJeCelegn ej sDeeiespemesej ie³ee~ legepeves en sej eJeCej ep³e DeyeKelcen eeen w 5 YeteÀWeÀeefmej keÀie epeleen w hmues hmueskeÀceKeÀefmej keÀskeÀie lesn es keÀceneroneMeÀgn w yeehekeÀn lesn Q Fve 5 YeteÀWej deep³ ehevesmen elegedeÀeehej peehe hle³ eÀWs ceveg³ eKeg Yeerkeìn lesn Qceheefeen Qmeeue S yegeeesn Q heefeeÀWeshejueyeeves DeeDees Deelceyegeeen w shefee heeueve, nsyeeye.. eKeJeve, j n ceefoueyeeye DeeDees yeehekeÀn lesn Q Qe QeÀuhe keÀuhe Deeleen B keÀmes Deeleen B ³en keÀE&ven eRpeves ieehee ceÀWeen wö Yeieueves Deekeì j epe³ eiseefmKe³ een w hej vlegYeieueve keÀve n w keÀyeDee³ e³en ekeÀmkeÀshee ven eRn w ieeheekeÀeles KeC[vekeì efo³ een w keÀCekeÀsÜhej ceÀWsie³ esn QÜhej keÀyeeo leesogle³ eDeejw nehefeen eseen w leesÜhej ceÀWeÀCeves DeekeÀ keÀ³ eekeÀ³ e~ ceveg³ eleeskeì Yeemes Peleven eRfeukeÀuen eDeej eFef ³en e Qmle³ eig ceÀWesn Q eFef ³en e~ legeDeYeerDeej eFef ³en e mesj eFef ³en eyeeleesn es yeehen es Peleesn Qeg en emcheCe&fkeÀkeÀej ehep³ eLes legen eDeyeefkeÀej ehegej eyeesn es Deehsehep³ e.. hmueslegehep³ eLes 2 1 peveleìkeÀ efeÀ hegej eyeesn es mle³ eig ceÀW peveefeÀ $ise ceÀW 2 peveueesn es yeehen eyeleueesn Q legehefeekeÀmesyeesn es keÀyemesfej sn es ³en mesfi keÀe®=eÀefeÀ leej n leen w mej sJeu[&keÀefmi ê peeÀWeÀDeesfo-ceÀ³e- DeveleìkeÀe j epeyes®eÀWeÀsyeheyeÀW mes Peleesn Qmeye SkeÀ mleesven eRmes PeÀWs veyej Jej n emes Peleesn Q

yeehekeÀn lesn Q ceÀDeekeÀ eÀeÀe[cemLehevekeÀ leen B DeyelegekeÀsmeue&Gemchevee yeeveen w leyelekeÀmle³ eig ceÀWe ven eRmkeÀes= yeeve³ en B w fe À Yeefle<e ceÀWeekeÀ legej ep³ ekeÀ À Ws Gmkeìyes® ceÀWeyeefeveMe n espe³ ise~ efeveMe Yeerok eÀWspe³ j ~ legeÀÀkeì keÀue ceÀDehevehei &ypeÀ³ eÀWs legkeÀsLeefpsenehee hepeleen w Deeiskeì³ eenise~ peeskeÀuhehmuesn Dee nise Jen emnise~

legkeÀsi is ueyele³ eepeleen w mLehve Deejw efeveMe n eseen w efeveMe keÀmes ise? Jen lesp eyenise leyeok eÀWs efo J³ e¢ efi mes efeveMe lesok een w Deeis®ueÀÀkeì keÀue Yeerok eÀWs mLehve keÀe Yeemes#eekeÀej efo J³ e¢ efi mes keÀ³ een w Deejw ÀÀkeì keÀue Yeerok eÀWs yeekeÀspemes eÀ³ eve ceÀWeve Yeer" ekeÀven eRn w fe À yeekeÀC" ceÀWekeÀ [ehekeÀ vesuie hepeleen Q ve%eve, ve³ eise, oesesÀWs Jeeß®eenes peleen Q ³ eve ceÀWeve keÀve keÀE&j keÀej ven eR³ en lesYeise fmeÀueie³ eepeleen w legeyeï eCe Jen Bpeleen es oskeeDeeÀDejw yeï eCeÀW keÀve en fmeÀueueieen w³ en Begefe³ ej lej ceÀWÀWs nesfmeÀ legkeÀsue³ ekeÀyeve³ eepeleen w efeCejgjgepeveskeÀsueS~ keÀ³ ekeÀspeye mieF&keÀ lesn Q es GvekeÀsmes Pe³ eepeleen w mengjlej ceÀWÀmes®ueve, meyemesÀ³ ej mes®ueve, Peiepeven eRkeÀve~ ³en Yeemyent Smen w yeehekeÀn lesn Q legkeÀsmeue&Gemchve.. ³en Beveve n w mlie&ceÀW en uepeF&PiepesDeefo n esseven eR DeYeerlegeefeCejgjger mengjlej peleen es Jen eBQeneve JeÀCeJe~ Gvepemes JeÀCeJemesfi hej n esseven eR JeÀCeJeoskeeÀWekeÀej ceÀWespeen epeleen Q efkeÀej nveEmne~ keÀn epeleen w DeeEmnehej ceesoskeeoskeeOeo& DeYeerlegepeveleen sn ceÀ³ ej lej ceÀWÀWs n Q DeYeen ceKeÀsefeCejgjgeceÀWeve n w peveleen es Jen Byengemegken ese n w Meeoer keÀhmueskeÀ³ eeÀ À en Dee keÀpeehenveleen w fepenkeÀs JeÀeJeen keÀn lesn Q legnej s hemeYeerDeYeerkeÀ³ een Q w keÀ À Yeerven eR³ en lesef keÀ À - eÀÊÊej n w³ en BegekeÀsekeì À E&Yeerpeej Deefo hen veseke À roj keÀej ven eR hej vlegkeÀn lesn Q e=mLeceÀWn ven w Meeo er Deefo ceÀWeve hepeleen w Yeespeej Deefo YeerYeuehen ves ceve ven eRn w ven eRes keÀn lesn efeCejgjgeceÀWeve hepeleen w Yeespeej Deefo YeerYeuehen ves Deeve seKeÀs Deeleceeo mes Peyehekeì³ eeo keÀ es peeDees Yeuekeì meÊYeer ³en ceÀ&³ eeo j Kees ³en hej #eueesn ce³ eeo ceÀWn lesn Q ³ en Bnceepeleen Q yeeye keÀ[e³ ej keÀWeves= GvekeÀmeLeYeerlepeefeYeeven w hej vlegnLekeÀej [sfoue³ ej [s.. lesmes PeÀWs³ en cepeyeleen Q peej Deefo hen ve Meeo er hej Yeuepeì Dees Fkeì À ej n esuesfeÀve cen eJeej yeeveen w mle³ eefmle³ eeÀWeÀ Yeerefo Keleesn Qeö ieg ves JeÀ³ e hemeYepeefo³ ee, mehe& keÀhemeYepeefo³ ee~ pesyeneojgemehemenesfo Keleesn Q vekeÀsen eJeej keÀn epeleen w yeehekeÀ³ eeo ceÀWn lesn Q ³ en Bnceepeleen Q yeeye mes®ueleeven eRn ieser yeehekeÀsYeuleeskeÀsefê³ ee®ueneiser efeÊekeÀlegeceefeukeÀyeveesn es ³en keÀceyeleen w³ el mle³ emerFve yeleeÀWeÀsfeukeÀueven eRpeves Meeo eceÀWeuekeì yeleÀWej vlegKeC[vekeÀ efo³ een w Yeieueveges®eö ceÀDegkeÀej epe³ eiseefmKeleee nB peyelekeÀpeeresj nlÀWs ö %eve- Deeoehehesj nlÀWs mgesj nlÀWs j epeÀeven mLehve nespe³ ise~ ye®eÀWeÀsfepeeÀ lepeeÀefeÀ/=eoepeleer

है – एक बाप को याद करो, दैवी लक्षण सीखो। कोई भी विकर्म न हो। यह तो असुरों का काम है। तुम अभी देवता बनते हो तो दैवीगुण धारण करने हैं। सबसे बड़ा है काम का कांटा। आदत पड़ी हुई है तो घड़ी-घड़ी गिर पड़ते हैं, माया चमाट मार फाँ कर देती है। तब गाया जाता है – आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती... अभी तुम एक बाप के बने हो। कहते भी हो यह सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ है। तो तुम ट्रस्टी बन जाते हो। यह सब उनका है, हमको उनकी श्रीमत पर चलना है। बाप भी देखते हैं हमको सब कुछ अर्पण कर फिर हमारी श्रीमत पर कैसे चलते हैं। कोई उल्टा-सुल्टा खर्चा कर पाप आत्माओं को तो नहीं देते हैं। शुरू में इस (ब्रह्मा) ने भी ट्रस्टी हो दिखलाया ना। सब कुछ ईश्वर अर्पण कर खुद ट्रस्टी बन गया। बस किसको भी कुछ नहीं दिया। ईश्वर के अर्थ किया तो ईश्वर के काम में ही लगना है। शरीर निर्वाह भी तो होता था ना। जो कुछ था सब सर्विस में लगा दिया। इनको देख फिर दूसरों ने भी ऐसे किया। भट्ठी बन गई। भट्ठी नहीं बनती तो इतने बच्चे होशियार कैसे होते, सर्विस के लिए। पाकिस्तान में सीखे फिर यहाँ आकर सीखे। जब समझाने लायक बने तब बाहर निकले। अभी तो देखो कितनी प्रदर्शनियाँ आदि करते रहते हैं। बड़ों-बड़ों को निमन्त्रण देते हैं। इस ज्ञान यज्ञ में विघ्न भी अनेक प्रकार के पड़ेंगे। विघ्नों से डरना नहीं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। बाप कहते हैं– योगबल में रह उन्हों को समझाओ। भगवान बाप के भी बच्चे बनकर फिर बाप को भूल जाते हो। माया के बन जाते हो। यह भी हार-जीत की कुश्ती है। परन्तु बॉक्सिग मुआफ़िक है। माया घूंसा लगाती है तो फाँ हो जाते हैं। बाप कहते हैं– माया से कभी हारना नहीं है। पवित्र रहेंगे तो विश्व के मालिक बनेंगे। कितनी बड़ी आमदनी है। अगर पूरा पुरूषार्थ नहीं करेंगे तो जाकर दास-दासी बनेंगे। राजधानी सारी यहाँ ही स्थापन हो रही है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) जब तक जीना है ज्ञान अमृत पीते रहना है। महावीर बन माया की बॉक्सिग में विजयी बनना है। सबके साथ तोड़ निभाते दिल एक बाप में रखनी है।

2) विघ्नों से डरना नहीं है। सर्विस में अपना सब कुछ सफल करना है। ईश्वर अर्पण कर ट्रस्टी बन रहना है। कुछ भी उल्टे सुल्टे कार्य में नहीं लगाना है।

वरदान:- डबल लाइट बन कर्मातीत अवस्था का अनुभव करने वाले कर्मयोगी भव

जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए, इसके लिए डबल लाइट रहो। डबल लाइट रहने के लिए कर्म करते हुए स्वयं को ट्रस्टी समझो और आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो, इन्हीं दो बातों का अटेन्शन रखने से सेकण्ड में कर्मातीत, सेकेण्ड में कर्मयोगी बन जायेंगे। निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बनो फिर कर्मातीत अवस्था का अनुभव करो।

स्लोगन:- जिनकी दिल बड़ी है उनके लिए असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।